प्रातः क्लास 15/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशान्ति। यह तो बच्चे जानते हैं हम आत्मा हैं न कि शरीर। इनको कहा जाता है देहीअभिमानी। मनुष्य सभी हैं देह–अभिमानी। यह है ही पापात्माओं की दुनिया अथवा विकारी दुनिया। रावण राज्य। सतयुग पास्ट हो गया है वहाँ सभी निर्विकारी रहते थे। बच्चे जानते हैं हम भी पवित्र निर्विकारी देवताएँ थे जो 84 जन्मों बाद आकर पतित बने हैं। सभी तो 84 जन्म नहीं लेते हैं। भारतवासी ही देवी देवताएँ थे। जिन्होंने 84/83 अथवा 82 लिये। वही पतित बने हैं। भारत की ही बात है। चीन वा अमेरिका वाले तो देवी देवता नहीं थे। भारत ही अविनाशी खण्ड गाया हुआ है। जब भारत में इन ल0ना0 का राज्य था तो इसको नई दुनिया नया भारत कहा जाता था। अभी है पुरानी दुनिया पुराना भारत। वह सम्पूर्ण निर्विकारी थे। कोई विकार न था। वही देवताएँ 84 जन्म ले अभी पतित बने हैं। पतित मनुष्यों को कहा जाता है कामी कुत्ता। कोई एक स्त्री होते दूसरी करता है तो कहा जाता है यह तो कामी कुत्ता है। रात–दिन विकार में ही फंसा हुआ है। काम का भूत क्रोध का भूत। लोभ मोह का भूत। यह सभी कड़े भूत हैं। इनमें मुख्य है देह–अभिमान का भूत। रावण राज्य है ना। यह रावण है भारत का आधा कल्प का दुश्मन। मनुष्य में 5 विकार प्रवेश करते हैं। इन देवताओं में यह भूत नहीं थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 इन्हों की आत्मा में भी विकार आ गई। तुम जानते हो जब हम देवताएँ थे तो कोई भी विकार का भूत नहीं था। सतयुग त्रेता को ही कहा जाता है राम–राज्य। द्वापर कलियुग को कहा जाता है रावण–राज्य। 5 विकार स्त्री में, 5 विकार पुरुष में हैं। विष्णु को 4 भुजा दिखाते हैं अर्थात् दो भुजा स्त्री की, दो भुजा पुरुष के। दोनों को मिलाकर चतुर्भुज विष्णु को कहा जाता है। यहाँ हरेक नर–नारी में 5 विकार हैं। द्वापर से कलियुग तक रावण राज्य चलता है। अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर बैठे हो। बेहद के बाप के पास आये हो विकारी से निर्विकारी बनने लिए। निर्विकारी बन फिर और कोई विकार में गिरते हैं तो बाबा लिखते हैं तुमने काला मुँह कर दिया फिर गोरा मुँह होना मुश्किल है। 5 मार से गिरने से हड्डी–गुड्डी टूट जाती है। गीता में भी भगवानुवाच है ना काम महाशत्रु है। भारत का वास्तव में धर्म–शास्त्र है ही एक गीता। हरेक धर्म का एक शास्त्र ही है। भारतवासियों के तो ढेर शास्त्र हैं। इनको कहा जाता है भक्ति। आधा कल्प भक्ति चलती है। सीढ़ी नीचे ही उतरते जाते हैं। दुनिया पुरानी तमोप्रधान बनती है ना। नई दुनिया को कहा जाता है सतोप्रधान। गोल्डेन एज। वहाँ कोई लड़ाई झगड़ा आदि न था। बड़ी आयु, एवर हेल्दी.....तुमको स्मृति आई हम देवताएँ बहुत ही सुखी थे। वहाँ अकाले मृत्यु होता ही नहीं। काल का डर रहता ही नहीं। वहाँ हेल्थ वेल्थ हैपीनेस सभी होते हैं। नर्क में हैपीनेस होती ही नहीं। कुछ न कुछ शरीर का दुख लगा ही रहता है। यह है अपार दुखों की दुनिया। वह है अपार सुखों की दुनिया। बेहद का बाप दुख की दुनिया थोड़े ही रचेंगे। बाप ने तो सुख की दुनिया रची। फिर रावण राज्य आया तो उनसे दुख का श्राप मिला। सतयुग है सुखधाम। कलियुग है दुखधाम। विकार में जाना गोया एक/दो पर काम कटारी चलाना है। कितनी बड़ी हिंसा है। मनुष्य कहते हैं यह तो भगवान की रचना है ना। परन्तु नहीं। भगवान की यह रचना नहीं है। यह रावण का रचना है। भगवान ने तो स्वर्ग रचा। वहाँ काम कटारी होती ही नहीं। ऐसे नहीं कि सुख दुख भगवान ही देते हैं। अरे, भगवान बेहद का बाप बच्चों को दुख कैसे देंगे। वह तो कहते हैं मैं सुख का वरसा देता हूँ। फिर आधा कल्प बाद रावण श्रापित करते हैं। सतयुग में तो अथाह सुख थे। माला माल थे। एक ही सोमनाथ के मंदिर में कितने हीरे जवाहर आदि थे। भारत कितना सॉलवेन्ट था। अभी तो भारत इनसॉलवेन्ट है। सतयुग में 100% सॉलवेन्ट, कलियुग में 100% इनसालवेन्ट। यह खेल बना हुआ है। अभी है आयरनएज। खाद पड़ते2 बिल्कुल ही तमोप्रधान बन गये हैं। कितना दुख है। यह एरोप्लेन आदि अभी 100 वर्ष में बने हैं। इनको कहा जाता है माया का पॉम्प। शो। मनुष्य समझते हैं गांधी ने तो स्वर्ग बना दिया। बाप कहते हैं यह है आर्टीफिशीयल। रावण का स्वर्ग कहेंगे। बहुत खूबसूरती है। माया का पॉम्प देख तुम्हारे पास कोई मुश्किल आते हैं। समझते हैं हमारे पास तो बड़े2 महल, मोटरें

आदि सभी कुछ है। हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। बाप समझाते हैं स्वर्ग सतयुग को कहा जाता है। जब इन(ल0ना0) का राज्य था। अभी इनका राज्य थोड़े ही है। हाँ कलियुग के बाद फिर इनका राज्य होगा। पहले भारत बहुत छोटा था। नई दुनिया में होते ही हैं 9 लाख देवताएँ। बस। पीछे वृद्धि को पाते हैं। मनुष्य सृष्टि वृद्धि को पाती रहती है ना। पहले सिर्फ देवी देवताएँ ही थे। तो बेहद का बाप यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी बैठ समझाते हैं। बाप बिगर और बिगर तो और कोई बता न सके। इनको कहा जाता है नालेजफुल गाडफादर। सभी आत्माओं का फादर। आत्माएँ सभी हैं भाई। फिर भाई और बहन बनते हैं। तुम सभी हो प्रजापिता ब्रह्मा के एडॉप्टेड चिल्ड्रेन्स। सभी आत्माएँ इनकी सन्तान तो हैं नहीं। उनको कहा जाता है परमपिता। उनका नाम है शिव। बस। बाप समझाते हैं मेरा नाम एक ही है शिव है। फिर भक्तिमार्ग में मनुष्यों ने तो बहुत ही मंदिर बनाये हैं। तो बहुत नाम रख दिये हैं। भक्ति की सामग्री कितनी ढेर हैं। उसको पढ़ाई नहीं कहेंगे। उसमें एमआबजेक्ट कुछ भी है नहीं। भक्ति है ही नीचे उतरने की। नीचे उतरते–2 तमोप्रधान बन जाते हैं। फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है सभी को। तुम सतोप्रधान बनकर स्वर्ग में आवेंगे बाकी सभी सतोप्रधान बन शान्तिधाम में रहेंगे। यह अच्छी रीत याद करो। बाप ने समझाया है तुमने हमको बुलाया है बाबा हम पतितों को आकर पावन बनाओ। तो अब मैं सारी दुनिया को पावन बनाने आया हूँ। मनुष्य समझते हैं गंगा स्नान से पावन बन जावेंगे। गंगा को पतित–पावनी समझते हैं। कुआँ पर पानी निकला उनको भी गंगा का पानी समझ स्नान करते हैं। गुप्त गंगा समझते हैं। तीर्थ यात्रा पर किसी पहाड़ों पर जावेंगे उसको भी गुप्त गंगा कहेंगे। भक्तिमार्ग है ही झूठ मार्ग। ज्ञान मार्ग है सत्य। गाड इज ट्रुथ कहा जाता है। बाकी रावण राज्य में सभी हैं झूठ बोलने वाले। गाड फादर ही सच खण्ड स्थापन करते हैं। वहाँ तो झूठ की बात ही नहीं होती। देवताओं को भोग भी शुद्ध लगाते हैं। अभी तो है आसुरी राज्य। सतयुग त्रेता में है ईश्वरीय राज्य। जो अभी स्थापन हो रहा है। ईश्वर आकर सभी को पावन बनाते हैं। देवताओं में कोई विकार होता ही नहीं। यथा राजा रानी तथा प्रजा सभी पवित्र होते हैं। यहाँ सभी हैं पापी, कामी, क्रोधी। नई दुनिया को स्वर्ग, पुरानी दुनिया को नर्क कहा जाता है। नर्क को स्वर्ग बाप के सिवाय कोई बना न सके। यहाँ सभी हैं नर्क वासी पतित। विष से ही जन्म लेते हैं। सभी को ले जाते हैं गंगा स्नान कराने। पतित हैं तब तो जाते हैं ना। सतयुग में है पावन। वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे कि हम पतित से पावन होने लिए गंगा स्नान करने जाते हैं। बाप समझाते हैं यह साधु सन्त भी पतित हैं। उन्हों का भी उद्धार करने हमको आना पड़ता है। कलियुग में हैं 4½ सौ करोड़। सतयुग में होंगे 9 लाख। कितना फर्क है। यह वैरायटी मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। बीजरूप है भगवान। वही रचना रचते हैं। पहले2 रचते हैं देवी देवता धर्म को। फिर वृद्धि को पाते2 इतने धर्म हो जाते हैं। पहले एक धर्म, एक राज्य था। सुख ही सुख था। मनुष्य चाहते भी हैं विश्व में शान्ति हो। वह अभी तुम स्थापन कर रहे हो। देवी देवताओं का राज्य अभी तुम फिर से स्थापन कर रहे हो। बाकी सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी थोड़े रहेंगे। यह चक्र फिरता रहता है। अभी है कलियुग अन्त सतयुग आदि का पुरुषोत्तम संगमयुग। इसको कहा जाता है कल्याणकारी युग। कलियुग के बाद सतयुग स्थापन हो रहा है। तुम संगमयुग पर पढ़ते हो। इसका फल फिर सतयुग में मिलेगा। ऐसी पढ़ाई तो कहाँ भी होती ही नहीं। तुमको इस पढ़ाई का सुख नई दुनिया में मिलेगा। यहाँ जितना पवित्र बनेंगे और पढ़ेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। अगर कोई भी भूत होगा तो एक तो सजा खानी पड़ेगी दूसरा फिर वहाँ जाकर कम पद पावेंगे। जो सम्पूर्ण बन फिर औरों को भी पढ़ावेंगे तो वह ऊँच पद भी पावेंगे। कितने सेन्टर्स हैं। लाखों सेन्टर्स हो जावेंगे। सारे भारत में खुलते जावेंगे। पापात्मा से पुण्यात्मा बनना यह है तुम्हारा एमऑबजेक्ट। पढ़ाने वाला एक शिवबाबा है। वह है नॉलेजफुल ज्ञान का सागर, सुख का सागर। बाप ही आकर पढ़ाते हैं। यह नहीं पढ़ाते। इनमें आकर वह पढ़ाते हैं। इनको कहा जाता है भगवान का रथ। तुमको कितना पद्मापदम भाग्यशाली बनाते हैं। तुम बहुत साहुकार बनते हो। कब

भी बीमार नहीं पड़ते। हेल्थ वेल्थ हैपीनेस सभी मिल जाता है। यहाँ भल धन है; परन्तु बीमारी आदि है तो वह हैपीनेस रह न सके। कुछ न कुछ दुख होता रहता है। उनका तो नाम ही है सुखधाम। स्वर्ग, पैराडाइज। इन ल0ना0 को यह राज्य किसने दिया यह कोई भी नहीं जानते। यह भारत में रहते थे। विश्व के मालिक थे। कोई पार्टीशन आदि न था। अभी तो कितनी पार्टीशन है। रावण राज्य है ना। कितने टुकड़े–2 हो गये हैं। लड़ते रहते हैं। वहाँ तो सारे भारत में इन देवताओं का ही राज्य था। वहाँ वजीर आदि होते ही नहीं। यहाँ तो वजीर देखो कितने हैं; क्योंकि बेअकल हैं। तो वजीर भी ऐसे ही तमोप्रधान पतित हैं। पतित को पतित मिले करके लम्बी हाथ। कंगाल बनते जाते हैं। कर्जा उठाते जाते हैं। सतयुग में अनाज़ सभी फ्री होती है। अभी धरती पुरानी है तो फल भी ऐसे ही मिलता है। सतयुग में तो अनाज फल आदि बहुत ही स्वादिष्ट होते हैं। तुम वहाँ जाकर सभी अनुभव कर आते हो। सूक्ष्मवतन में भी जाते हो तो स्वर्ग में भी जाते हो। तो बाप बैठ समझाते हैं यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। पहले भारत में एक ही आदि सनातन देवी देवता धर्म था। दूसरा कोई धर्म था नहीं। फिर द्वापर में रावण राज्य शुरू होता है। अभी है विकारी दुनिया। फिर तुम पवित्र बन निर्विकारी देवता बनते हो। यह स्कूल है। भगवानुवाच मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ। तुम भविष्य में यह बनेंगे। राजाई कब पढ़ाई से नहीं मिलती है। बाप ही पढ़ाकर नई दुनिया की राजधानी देते हैं। वह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सद्गुरु एक ही शिवबाबा है। बाबा माना जरूर वरसा मिलना चाहिए। भगवान जरूर स्वर्ग का ही वरसा देंगे। रावण जिसको हर वर्ष जलाते हैं यह है भारत का नम्बरवन दुश्मन। रावण ने कैसा असुर बना दिया है। इनका राज्य 2500 वर्ष चलता है। तो बाप समझाते हैं मैं तुम बच्चों को सुखधाम का मालिक बनाता हूँ। रावण तुमको दुखधाम में ले जाती है। तुम्हारी आयु कम हो जाती है। अचानक ही अकाले मृत्यु हो जाती। अनेक बीमारियाँ आदि होती रहती हैं। वहाँ ऐसी कोई बात नहीं होती। नाम ही है स्वर्ग। अभी अपन को कहलाते भी हैं हिन्दू। क्योंकि पतित है तो देवता कहलाने लायक नहीं है। बाप इस रथ द्वारा बैठ समझाते हैं। इनके बाजु में आकर बैठते हैं तुमको पढ़ाने। यह भी पढ़ते हैं। हम सभी स्टुडेन्ट्स हैं। बाप एक ही टीचर है। अभी बाप पढ़ाते हैं फिर 5000 वर्ष बाद आकर पढ़ावेंगे। यह पढ़ाई, यह ज्ञान फिर गुम हो जाता है। पढ़कर तुम देवता बने। 2500 वर्ष सुख का वरसा लिया फिर है दुख। रावण का श्राप। अभी भारत बहुत दुखी है। यह है दुखधाम। पुकारते भी हैं हे पतित–पावन आओ। आकर पावन बनाओ। तुम्हारे में अभी कोई भी विकार न होना चाहिए; परन्तु आधा कल्प की बीमारी कोई जल्दी थोड़े ही निकलती है। उस पढ़ाई में भी जो अच्छी रीत नहीं पढ़ते हैं वह फेल होते हैं। जो पास विद् ऑनर होते हैं वह तो स्कॉलरशिप लेते हैं। तुम्हारे में भी जो अच्छी रीत पवित्र बन और फिर दूसरों को बनाते हैं तो यह प्राइज(ल0ना0) लेते हैं। माला होती है ना आठ की माला है पास विद् ऑनर। फिर 108 की। प्राइज इनको मिलती है जो पहले–2 आठ में आते हैं। जिनकी माला ही सिमरी जाती है। वह थोड़े ही इनका रहस्य समझते हैं। माला में ऊपर है फूल। फिर होते हैं दाने मेरु। स्त्री और पुरुष दोनों ही पवित्र बनते हैं। यह पवित्र थे ना। स्वर्गवासी कहलाते थे। यही आत्मा फिर पुनर्जन्म लेते–2 अभी पतित बन गये हैं। फिर यही पवित्र बन पावन दुनिया में जावेंगे। फिर से ऐसा बनना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट होती है। विकारी राजाएँ निर्विकारी राजाओं के मंदिर में आकर उन्हों को पूजते हैं। वही पूज्य सो फिर पुजारी बन गये हैं। विकारी बनने से फिर वह लाइट का ताज भी नहीं रहता। पूज्य से पुजारी बन जाते हैं। यह खेल बना हुआ है। यह है बेहद का वन्डरफुल ड्रामा। बेहद का ड्रामा। पहले एक ही धर्म है जिसको रामराज्य कहा जाता है फिर और और धर्म वाले आते हैं। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है सो एक ही बाप समझा सकते हैं। भगवान तो एक ही है। तुमको भगवान पढ़ाकर यह बनाते हैं। यह है तुम्हारा एमऑबजेक्ट। और सभी जगह मनुष्य पढ़ाते हैं। कितने ढेर सतसंग आदि होते हैं। कथाएँ बैठ सुनाते हैं। वह

हैं झूठी कथाएँ। शास्त्र भी सभी झूठे। वह सुनते–2 तुमको नीचे उतरना ही है। भक्ति से तुम नीचे ही गिरे हो। भक्ति से जब दुर्गति होती है तब फिर भगवान आकर सद्गति देते हैं। अभी भारत बिल्कुल ही गिरा हुआ है। कितना गंद लगा पड़ा है। कितने जेल्स हैं। कितने खून रेजी आदि होते हैं। यह है ही दुखधाम। सतयुग को कहा जाता है सुखधाम। पावन। फिर विषस पतित बनने से बेसमझ बन गये हैं। भारत का कैरेक्टर बिगड़ा हुआ है; क्योंकि विषस हैं। भारत पवित्र था तो कैरेक्टर्स बहुत ही अच्छे थे। अभी पवित्रता नहीं है। तो दुख ही दुख है। यह चक्र फिरता रहता है। यह ज्ञान भी अभी तुम ही सुनते हो वहाँ फिर भूल जावेंगे। फिर जब बाप आवेंगे तब ही यह ज्ञान मिलेगा। तुम बेहद के सारी विश्व के मालिक बन जाते हो। वहाँ मरने का नाम नहीं होता। आत्मा खुशी से एक शरीर छोड़कर जाकर दूसरा लेती है। आत्मा को ही पार्ट मिला हुआ है। जैसे एक्टर्स को पार्ट मिलता है। शुरू से लेकर अन्त तक तुम्हारा पार्ट है। यह भी बेहद का ड्रामा है। यह समझने से ही तुम सुखधाम के मालिक बनते हो। अभी तो दुख की दुनियाँ है ना। आत्माएँ आती रहती हैं। झाड़ की वृद्धि होती रहती है। पीछे वाली आत्माएँ आती हैं दुखधाम में। यह भी ड्रामा बना हुआ है। जो ज्ञान नहीं लेते हैं वह पीछे दुखधाम में आते हैं। मनुष्य को पहले सुख पीछे दुख होता है। नया सो फिर पुराना होता है। यह है बेहद की बात। बाप नई दुनिया स्वर्ग बना रहे हैं। अभी तुम स्वर्ग के लिए पढ़ रहे हो। राजधानी स्थापन होती है तो नम्बरवार पास होते हैं। या तो राजा बनेंगे या तो प्रजा। नहीं तो यह सतयुग कहाँ से आई। यह राजधानी स्थापन होती ही है संगम पर। कलियुग है पुरानी दुनिया। बाप आकर पुरानी को नई बनाते हैं। नई दुनिया में विकार नहीं होता। इसलिए 5 भूतों को अभी निकालना है। इसमें ही मेहनत लगती है। बाप को याद न करने से फिर भूत भी पकड़ लेते हैं। बाप को याद करने से ही पाप भस्म होंगे। फिर अभी पाप न करना है; परन्तु माया ऐसी है जो पाप करा देती है। इसलिए सावधानी दी जाती है। नम्बरवार पढ़ते हैं ना। जो अच्छी रीत खुद पढ़ते हैं वह दूसरों को भी पढ़ाते हैं। बाप सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सद्गुरु भी है। सभी को साथ में ले जावेंगे। एक धर्म की स्थापना हो जावेगी। यहाँ शास्त्र आदि सभी भूल जानी है। पवित्र भी बनना है। वहाँ कोई विकार नहीं होता। है ही मोहजीत। अकाले मृत्यु कब होता ही नहीं। रावण होता नहीं। योगबल से पहले सा0 होता है अभी हम यह पुराना शरीर छोड़ गर्भ महल में जावेंगे। यहाँ तो गर्भ जेल में भी सजाएँ खानी पड़ती हैं। फिर शारीरिक कर्म–भोग भी भोगना पड़ता है। वहाँ कर्म विकर्म होता ही नहीं। छी–छी कर्म होते ही नहीं। यहाँ तो 5 विकार है ना। बाप ही आकर 5 भूत निकालते हैं। आधा कल्प का यह भूत बड़ा ही मुश्किल निकलते हैं। इस पढ़ाई में बहुत मज़ा है। दिल में समझते हैं हम अभी बाप के बने हैं फिर स्वर्ग के मालिक बनेंगे; परन्तु हमारे से कोई भी विकार न होना चाहिए। अगर विकार होगा तो सज़ा भी खानी पड़ेगी और पद भी भ्रष्ट होगा। विकारी बनते हैं तो फौरन लिखते हैं बाबा हम गिर गये अभी रहम करो। बाप कहेंगे जो कुछ भी किया वह सारी कमाई चट हो गई। फिर नई सिरे मेहनत करनी पड़े। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। मेहनत है। कायदे भी हैं। शादी भी भल करे; परन्तु पवित्र रहने से विश्व की बादशाही मिलती है। तो क्यों नहीं एक जन्म लिए पवित्र बनेंगे। यह पतित दुनिया ही खत्म हो जाती है। फिर यह तो प्रश्न उठ नहीं सकता कि दुनिया कैसे चलेगी। अरे इतने यह 400 करोड़ मनुष्य भी खलास हो जावेंगे। सिर्फ छोटा भारत ही होगा। यह समझने की बात है। तुम बच्चे अभी नॉलेजफुल बन रहे हो। बाप ही बनावेंगे ना। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो। बच्चे को कोई घड़ी2 कहना नहीं होता है। आपे ही बच्चे हिर जाते हैं। यह बाप भी कहते हैं घड़ी2 मुझे कहना थोड़े ही है; परन्तु माया का अपोजीशन बहुत है इसलिए कहता हूँ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बच्चों को श्रीमत मिलती है। श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनेंगे। वह बाप ही बैठ पढ़ाते हैं। फिर भी बाप कहते हैं याद करो। बाप को भूलो मत। इसमें बन्धन तो कोई है नहीं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।